Q. प्रेमगाथा परम्परा का विकास दिखाते हुए जायसी और उनके पद्मावत का मूल्यांकन करें।

(त्रिवेणी)

अथवा

Q. प्रेमगाथा कवियों में जायसी का प्रमुख स्थान है।" इस कथन का विश्लेषण करते हुए जायसी के पद्मावत की संक्षिप्त समीक्षा प्रस्तुत करें-

जायसी 'पद्मावत' प्रेमगाथा परम्परा का परिपुष्ट ग्रन्थ है। जायसी से पूर्व प्रेमगाथाओं का स्वरूप निर्माण हो चुका था। सहृदय जन भेद-भाव से परे होते हैं। यदि हम इतिहास के पन्नों उलटकर देखें तो प्रतीत होगा कि एक ओर तो सिकन्दर लोदी मथुरा के मंदिरों को गिराकर हिन्दुओं पर अत्याचार कर रहा था, दूसरी ओर बंगाल का शासक हुसैनशाह 'सत्यपीर' की कथा के प्रसार में लीन हो रहा था। कुतुबन ने सन् 909 हिजरी में 'मृगावती' नामक प्रेम-कथा की रचना की। जायसी ने अपने पहले की प्रेम गाथाओं का परिचय निम्न प्रकार दिया है-

"विक्रम धँसा प्रेम के" बारा। सपनावति कहँ गएउ पतार
मधू पाछ मुगधावति लागी। गगनपूर होइगा बैरागी।।
राजकुंवर कँचनपुर गयऊ। मिरगावति कहँ जोगी भयऊ।
साध कुंवर खंडावत जोगू। मधुमालति कँह कीन्ह बियोगू
प्रेमावति कँह सुरसरि साधा। ऊषा लागि अनुरुध वर बाँधा।

विक्रमादित्य और ऊषा-अनिरुद्ध की प्रसिद्ध कथाओं को छोड़ देने से चार प्रेम कहानियाँ जायसी से पूर्व लिखी हुई पायी जाती हैं। मृगावती मधुमालती, मुग्धावती प्रेमवती। जायसी के बाद भी यह परम्परा चलती रही। गाजीपुर निवासी उसमान

PAGE No.
DATE / /

प्रेम गाथा काव्यों की कुछ निम्नलिखित विशेषताएँ है-

1. सभी प्रेमगाथा - काव्य फारसी की मसनवियों की शैली पर हैं
2. ये काव्य अवधी भाषा में प्रणीत हैं
3. ये सभी प्रेम-कहानियाँ मुसलमानों के द्वारा लिखी गयी है
4. लौकिक प्रेम - कथा द्वारा ईश्वरीय- प्रेम की व्यंजना की गई
5. प्रेम-पीर की प्रमुखता दी गई।
6. साधना क्षेत्र में ईश्वर को प्रियतम और जीव को प्रिय माना गया है

पद्मावत - प्रेम-गाथा काव्यों में प्रतिनिधि ग्रन्थ है। इसके कथानक में कल्पना और इतिहास का मणि-कांचन संयोग हुआ है रत्नसेन संतति खंड तक पूर्वार्द्ध है और राघव चेतन देश-निकाला खंड से लेकर अलाउद्दीन के आक्रमण तथा नागमती और पद्मावती के सती होने तक उत्तरार्द्ध है। उत्तरार्द्ध का कथानक तत्कालीन विवरणों और इतिहासों में थोड़े से अन्तर से मिल जाता है। पूर्वार्द्ध भी बिल्कुल कल्पना पर आधारित नहीं है राजा रानी और शुक के रूप में कथा समस्त उत्तरी भारत में प्रचलित है।

जायसी सच्चे संत थे उनका हृदय प्रेम की पीर से भरा हुआ था। 'पद्मावत' में उनके हृदय की भावनाओं का सागर लहरा रहा है जायसी ने पद्मावत के अन्त में कथानक को अन्योक्ति कहकर आध्यात्मिक रूप दे दिया है लौकिक पक्ष को हटा देने से रत्नसेन जीव, पद्मावती ईश्वर, हीरामन तोता गुरु, नागमती प्रतिरूप का धंधा, राघवचेतन शैतान, अलाउद्दीन माया के प्रतीक के रूप में आते हैं-

११तन चितउर मन राजा कीन्हा। हिय सिंहल बुधि-पदि
गुरु सुआ जेइ पंथ दिखावा। बिनु गुरु जगत को निर
नागमती यह दुनिया धंधा। बाँचा सोइ न जो चित
राघव दूत सोई सैतानू। माया अलाउदीन सुलतानू॥

जायसी के संयोग और वियोग-वर्णन

दोनों को सांगोपांग और सुन्दर ही पारलौकिकता का आरोप करने के कारण संयोग का वर्णन कहीं-कहीं अस्वाभाविक अवश्य हो गया है। सूफी कवियों के विरह की प्रधानता होती है। जायसी का संयोग-वर्णन अत्यंत स्वाभाविक है। नागमती एक साधारण वियोगिनी के रूप में दिखाई गई है। उसके विरह में समस्त सृष्टि सहयोग देती हुई दिखाई पड़ती है। निम्न पंक्तियों में वियोग-जनित प्रतीक्षा साकार हो उठी है-

वह पथ पलकन्ह जाइ बुहारौं। सीस-चरन के चलौं सिधारौं।

देखिए नागमती के संदेश में कितनी विरह-जनित कातरता है-

पिउ सौं कहेहु सन्देसड़ा, हे भौंरा! हे काग!
तब धनि-बिरहा जरि मुई तिहिक धुआँ हम लाग॥

~~सुख धरि~~

वियोगिनी की प्रेम परिपूर्ण स्वाभाविक अभिलाषा देखिए-

यह तन जारौं छार कै, कहौं कि पवन उड़ाउ।
मकु तिहि मारग भहै पड़ूँ, कन्त धरै जहँ पाँउ॥

वास्तव में जायसी का वियोग-वर्णन अद्वितीय है। पद्मावत में लौकिक-पक्ष भी मिलता है। रत्नसेन का माता से विदा लेना, पद्मावती का सखियों आदि से चलते समय मिलना, राघवचेतन को कंगन देकर पद्मावती

द्वारा शैली का प्रयास आदि ऐसे ही स्थल हैं। इन विशेषताओं के साथ-साथ पद्मावत में कतिपय दोष भी हैं। वस्तु-वर्णन कहीं-कहीं बहुत लम्बा और अरुचिकर हो गया है जायसी को कुछ ऐसी सनक सवार होती है कि एक लम्बी-सी सूची प्रस्तुत करने लगते हैं। भोज के समय शायद ही कोई पकवान छूटे। पुनरुक्ति आदि कुछ भाषा संबंधी दोष भी है। इन सब होते हुए भी जायसी का 'पद्मावत' प्रेम गाथा काव्यों में प्रथम तथा महाकाव्यों में रामचरितमानस के बाद ही स्थान रखता है अपनी कृति पद्मावत के रूप में जायसी सदैव अमर रहेंगे।